* प्रमाणसमुच्चय – दिङ्नाग (बौद्ध)
* प्रत्यक्षं कल्पनापोढं नामजात्याद्यसंयुतम् – प्रत्यक्ष (दिङ्नाग) (प्रमाणसमुच्चय)
  (कल्पना से रहित) (नाम जात्यादि से रहित)
* प्रत्यक्ष मानसिक कल्पना व्यापार है – अनुमान – ① स्वार्थ ② परार्थ।
* प्रत्यक्ष के ④ भेद ⇒ बौद्धानुसार →
  ① इन्द्रियप्रत्यक्ष ② मानस ③ योगी ④ स्वसंवेदन

* ग्रीकस ने बौद्धिक साम्राज्य का विस्तार किया था।
* रोमन ने भौतिक साम्राज्य का विस्तार किया था।
* फिलोसिफी → बुद्धितत्व पर आधारित तर्क विशिष्ट प्रक्रिया। (आन्वीक्षिकी)
* पश्चिमी ज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली ग्रीक से आती है।
* ग्रीक संस्कृति बुद्धि और तर्क पर आधारित है।
* भारतीय दर्शन में तर्क और शब्दों की समाप्ति पर अनिर्वचनीयता के द्वारा ज्ञान बोध होता है। उससे आगे की प्रक्रिया साधना के द्वारा पूर्ण होती है। यह हमें सामान्यतः भक्तिकाल में दिखाई देता है।

* निर्गुण निर्गुण गुण को गाऊँगा,
  शून्य शिखर पर अनहद बाजे।
  राग छत्तीस सुनाऊँगा।

* भारतीय संस्कृति के मूल भेद
  - आगम (तन्त्र)
  - निगम

* प्रत्यभिज्ञा – काश्मीरशैवदर्शन (आधुनिक अभिधान)
  त्रिकदर्शन (पारम्परिक अभिधान)
  षडर्धदर्शन
* इसका स्रोत आगम में है।
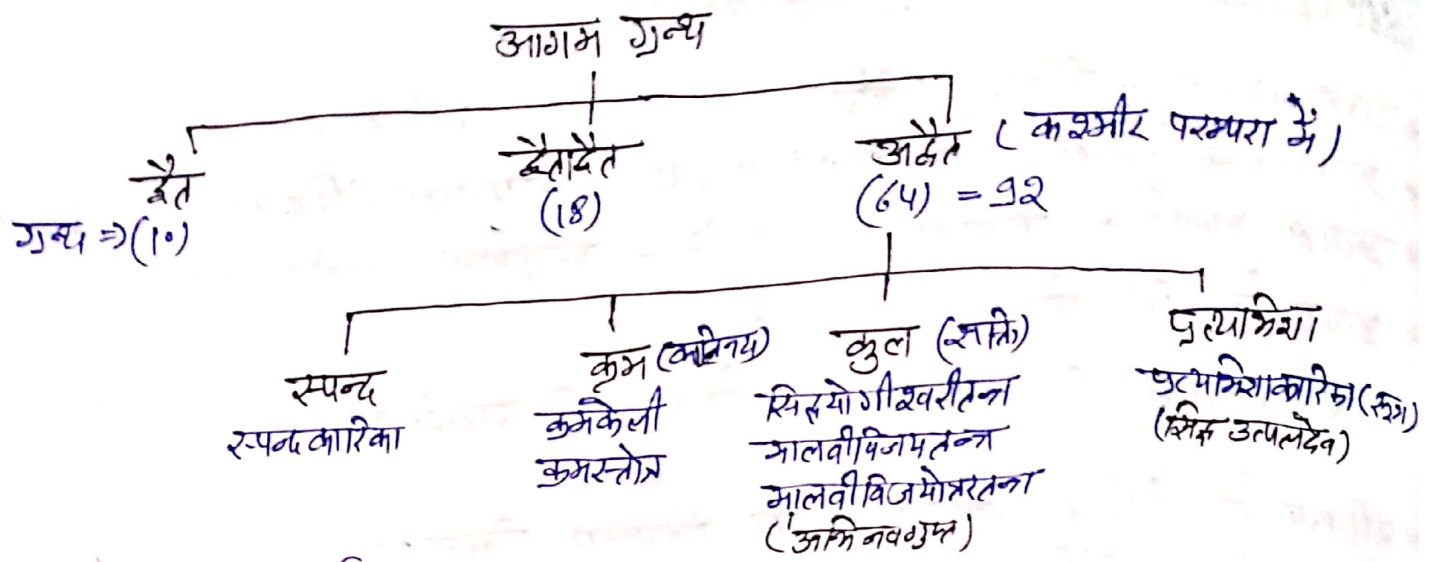
* कालीनय = मार्ग । कुल = कौल (सबसे प्राचीन)

* उत्पलदेव के पूर्व के आचार्य (सिद्धसोमानन्द) इन्होंने शिवदृष्टि नामक ग्रन्थ लिखा इसी परम्परा में आगे अभिनवगुप्त आए। उनका वैशिष्ट्य यह है कि वे इन सभी सम्प्रदायों के प्रमाणभूत आचार्य हैं

* तन्त्रालोक = अभिनवगुप्त (आठ भागों में प्रकाशित
* विवेकटीका = जयदन्त ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृत्तिविमर्शिनी।

25/07/2019

* विद्याओं का इतिहास वैचारिक होता है, जैसे- दर्शन धर्मशास्त्रादि।
* सामान्य इतिहास लौकिक इतिहास होता है। — राजा आदि कालक्रम।

|29/07/2019|

(लेखक)
* Baumgarten – Aesthetica – सौन्दर्य शास्त्र
* प्रगतिवाद और मार्क्सवाद से प्रभावित होकर इतिहास लिखने की विधा प्रारम्भ हुई।
* 'ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते'।
* वर्णमाला – इस शब्द का वर्णन प्रत्यभिज्ञा दर्शन में किया गया है। यह एक तात्विक शब्द है।
* वर्णक्रम = ① मालिनी (नादिफान्त) ② मातृका सामान्यवर्णमाला
* शोध की आवश्यकता वहां होती है जहां सम्भावना होती है,
* भर्तृहरि के गुरु – वसुरात।
* जयशंकर प्रसाद की कामायनी का आधार प्रत्यभिज्ञादर्शन है।
* शैवदर्शन में सप्तविध प्रमाताओं की चर्चा आती है।
* शैवदर्शन — धर्म – विशेषताएं।
  — दर्शन भाषादर्शन
  — योग
  — कलाशास्त्र
* यत्र यत्र मनस्तुष्टिः मनः तत्रैव धारयेत – प्रत्यभिज्ञा
* पंचकृत्य सृष्टि ① स्थिति ② संहार ③ तिरोधान ④ अनुग्रह। ✓
* शैवदर्शन के अनुसार असत् रूप कुछ भी नहीं है,
* स्पन्द के दो भाग – ① आकुञ्चन ② प्रसारण।

5/08/2019

इतिहास ग्रन्थ मुख्यतः 19वीं 20वीं शताब्दी में लिखे गए।
राजा के वंश का इतिहास = जैविक इतिहास ⟶ एक दिशा में
वैचारिक इतिहास चतुर्दिक होता है ⓪
स्फोटदर्शन – रघुनाथ पाठक (बिहार भाषा परिषद से प्रकाशित)
भारतीय प्रतीकविधान – जनार्दन मिश्रा (बिहार ---)
काश्मीरेतिहास: – हनुमत्प्रसाद शास्त्री
चितिः स्वतन्त्रा विश्वसिद्धिहेतुः। चिति–
शिव शक्ति सदाशिव ईश्वर सद्विद्या ~~माया~~ शुद्ध तत्व — इसी आधार पर शिव को पञ्चरूपी कहा जाता है,
माया कला काल नियति — 25 तत्व सांख्य के अनुसार
के 5 कञ्चुक
चित्शक्ति आनन्द इच्छा ज्ञान क्रिया – ये पांच शक्तियां 5 शुद्ध तत्वों पर हैं।

* शैवदर्शन में ईश्वर शब्द शिव का वाचक है।
* सृष्टि की प्रक्रिया संकुचन की प्रक्रिया है।
* ① सद्गुरु ② सदागम ③ सदुपदेश (मोक्षमूलक) त्रिविध आधार। ✓ (क्रम अक्रम क्रमाक्रम)
* शिथिल भाषा शिथिल चिन्तन का द्योतक है।
* तीन प्रकार के मलों की चर्चा —
① आणव ② कार्म ③ मायीय।

14/08/09

* सत्तर्क — उत्तम योगाङ्ग
* शैव दर्शन में षडङ्ग योग।
* शैवयोग प्रवृत्तिपरक है, निवृत्तिपरक नहीं।
* सहजयोग - सहजिया सम्प्रदाय।
* भारतीय कला एक प्रकार से सहजयोग है।
* ज्ञान का अभाव नहीं है ज्ञान सीमित हो जाता है मलों के द्वारा।
* प्रकाश, विमर्श = पारिभाषिक शब्द।
स्वतन्त्र है
* प्रकाश = अभिव्यक्त करने की क्षमता। वह स्वतन्त्र है और जगत का प्रकाशन करता है।
* विमर्श = चित्‌शक्ति, स्वातन्त्र्यशक्ति, परावाक्, प्रतिभा, शक्ति।

Semitic — God → ① Man.
② Formless (रूप रहित) (निराकार)
③ with attributes (सगुण)
④ singular

Jew (यहूदी), Christian (इसाई), Islam (मुस्लिम)

God ने 6 दिन में world को बनाया।

religion = धर्म
Holy Book — लिखित ग्रन्थ
Prophet — पैगम्बर

अणु — जीव, संसारी, पशु, चित्त
चित — असीमित चैतन्य, ~~ ~~ — सृष्टि जड़ होती है। — आरोह क्रम ↓ अवरोह क्रम ↑
चित्त — पुरुष

17/08/019

* प्रमाण व्यवस्था - बौद्ध

	प्रमाण	प्रमेय	प्रमाण सम्प्लव
बौद्ध -	प्रत्यक्ष	पारमार्थिक सत्य	स्वलक्षण
	अनुमान	सांवृतिक सत्य	सामान्य लक्षण

Epistemology (मान) — प्रमाण मीमांसा

Ontology (मेय) — तत्व मीमांसा

* आगम, शास्त्र, प्रसिद्धि - समानार्थक
* चार प्रकार के उपायों की चर्चा -

* शैव दर्शन की विशेषताएं :-

10, 18, 64
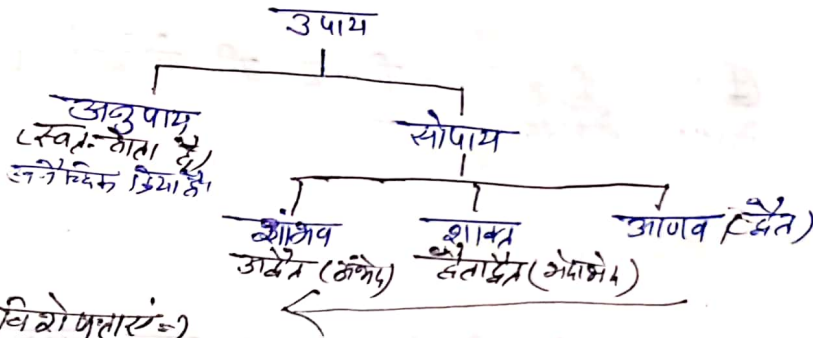
1. यह आगममूलक दर्शन है, इसके कुलमिलाकर 92 आगम हैं। (नीलमत पुराण में कश्मीर का वर्णन है, कश्यप ऋषि के नाम पर।)
2. यह शिव पार्वती के संवाद रूप में है।
3. इस दर्शन में असत् कुछ भी नहीं है इसके सैद्धान्तिक पक्ष का नाम आभासवाद है।
4. यह प्रमातृनिष्ठ मुख्य दर्शन है। सप्तविध प्रमाताओं की चर्चा।
5. 36 तत्व हैं विस्तृत प्रमेय मीमांसा, शिव से पृथ्वी तक।
6. इसे प्रमाण मीमांसा में कोटिगत सत्ता नहीं है। (वर्गीकरण नहीं है।)
7. यह दर्शन, योग, धर्म, तन्त्र, कला है। वागयोग भी।
8. इस दर्शन में सृष्टि प्रक्रिया वर्णों के माध्यम से बताई जाती है। वर्णों का क्रम दो प्रकार - ① मालिनि क्रम (साधना) ② मातृका क्रम।

मालिनी क्रम न से फ तक॥

21|08|019

* Poet – Maker (ग्रीक शब्द)
* संविकलन – एक इकाई में व्यवस्थित करना। (मापना)
* योगवाशिष्ठ (ग्रन्थ) – काल पर विस्तृत चर्चा।
* संस्कृत जगत के प्रतिष्ठित आचार्य →
* नागार्जुन – प्रथम श. शून्याद्वैत
भर्तृहरि – चतुर्थ श. शब्दाद्वैत
आदिशंकर – नवम श. ब्रह्माद्वैत
अभिनवगुप्त – शिवाद्वैत

+ सत्, – असत्, ± ✓ सदसत्, ± × नोभयसदसत् = विचार की कोटियां।

26|08|019

* जिसके एक विशेष प्रविधि से किन्हीं तथ्यों का पता लगाया जाए उसे इतिहास कहते हैं।
* मधुराजयोगी क्षेमेन्द्र ये अभिनवगुप्त के शिष्य थे।
* Swami Lakshmana Joo ⇒ कश्मीर परम्परा के अन्तिम आचार्य।
* आगम, शास्त्र, प्रभृति ये समानार्थी हैं।
* जो ईश्वर के द्वारा उपदिष्ट है = शास्त्र।
* आगम परम्परा के प्रथम शिष्य = दुर्वासा।
* पुराणों की शैली = सुहृत सम्मित।
* कहा जाता है कि कृष्ण ने भी शिव से आगमों का ज्ञान प्राप्त किया था।

शिव → दुर्वासा (तीन मानस पुत्र) [परम्परा]

- श्रीनाथ (18) (द्वैताद्वैत) रुद्रतन्त्र शक्ति प्रधान(स्पन्द)
- आमर्दक (10) (द्वैत) शिवतन्त्र भारूपता
- त्र्यम्बक (64) (अद्वैत) (भैरवतन्त्र) 8 × 8 = 64 शिवरूपता
  - त्र्यम्बक की पुत्री + → अर्धत्र्यम्बक (1/2)
    - शंभुनाथ (कौल शाखा)
    - सुमतिनाथ

14वीं शताब्दी तक भारत में परम्परा चली। (3 1/2 शाखाएं)

* यह परम्परा सिद्ध परम्परा कहलाती है।
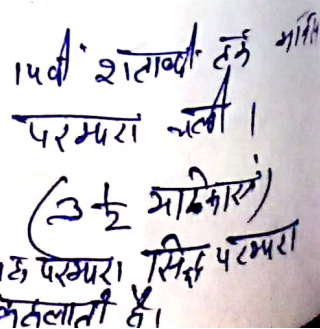
* अभिनव गुप्त के गुरु शंभुनाथ जालन्धर पीठ के आचार्य थे।
* 15 वीं से 19 वीं पीढ़ी संगमादित्य से सोमानन्द तक पितापुत्र परम्परा।
* संगमादित्य – 13 वीं शताब्दी,

गुरुशिष्य परम्परा
* सोमानन्द → उत्पलदेव → लक्ष्मणगुप्त → अभिनवगुप्त → क्षेमराज मधुराजयोगी क्षेमेन्द्र

नरशक्तिशिवात्मकं त्रिकं।

भैरवतन्त्र

- ज्ञानप्रधान — सम्प्रदाय ⇒ कुल / प्रत्यभिज्ञा
- योगप्रधान — क्रम / स्पन्द
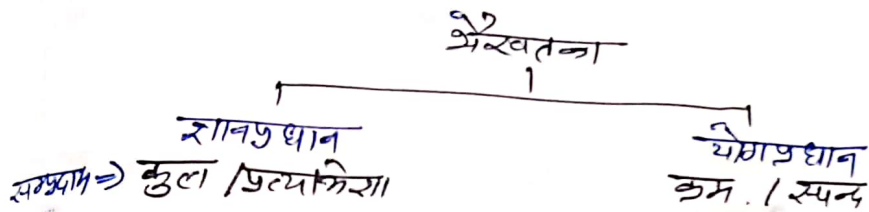
* कौलपरम्परा के आचार्य – सोमदेव → (शिष्य) सुमतिनाथ → शंभुनाथ → ~~अभिनवगुप्त~~
* प्रत्यभिज्ञा परम्परा के आचार्य → सोमानन्द (शिवदृष्टि) → उत्पलदेव → लक्ष्मणगुप्त → अभिनवगुप्त
* क्रम के आचार्य → शिवानन्दनाथ → तीन शिष्याएं – केयूरवती, मदनिका, कल्याणिका → (शिष्य) श्री गोविन्दराज, चक्रभानु, ऐरकनाथ।
  → उज्जरनाथ उज्झट → उद्भटनाथ → अभिनवगुप्त

* स्पन्द के आचार्य ⇒ वसुगुप्त → (शिष्य) भट्टकल्लट → अभिनवगुप्त

प्रधानता की दृष्टि से आगम 3 प्रकार

- सिद्धान्त — क्रियाप्रधान
- वामकतन्त्र — ज्ञानप्रधान
- मालिनीतन्त्र — ज्ञान क्रियाप्रधान

[मालिनीविजयतन्त्र] ग्रन्थ ← सिद्धयोगीश्वरीतन्त्र

मालिनीविजयवार्तिक – अभिनवगुप्त टीका)

* अभिनवगुप्त के पूर्वज का नाम ⇒ अत्रिगुप्त। 8 वीं शताब्दी

↓ – पिता माता

नरसिंहगुप्त + विमला। उपनाम अभिनवगुप्तपादाचार्य

गुप्त – उपाधि।

2/09/019
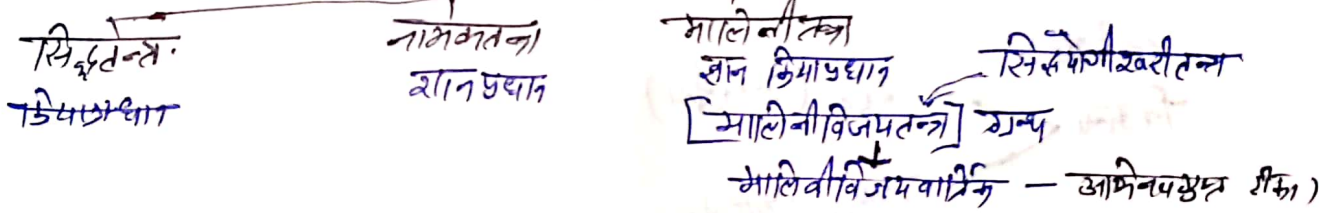
* (उत्पलदेव) प्रत्यभिज्ञा कारिका (प्रत्यभिज्ञासूत्र) → टीका ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी (अभिनवगुप्त) (लघ्वीविमर्शिनी)
* (उत्पलदेव) ↓ विवृति → ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी (अभिनवगुप्त) (बृहतीविमर्शिनी)

* रोमन सभ्यता में पहला मौखिक काव्य – वर्जिल (एनीड) — होमर ।

* Pluto ⇒
 Philosophy
 History
 Literature

* Renaissance - ज्ञान का पुनरोदय ।

 John Donne = 17 वीं शताब्दी इंग्लैंड का कवि ।
 ↳ New philosophy puts all in doubt....

* त्रिक ⇒ अ इ उ ⇒ अइउण् ।

पशु	पति	पाश
द्वैत	अद्वैत	द्वैताद्वैत
परा	अपरा	परापरा
शिव	शक्ति	विमर्श

* शैवदर्शन समरसता परक है। एक तत्व की सर्वत्र व्याप्ति ।
* 'जयशंकर प्रसाद' की 'कामायनी' महाकाव्य 'शैवदर्शन' पर आधारित है।

(18वां सूत्र)
विकल्प →
- शुद्ध (अन्तर्मुख)
- अशुद्ध (बहिर्मुख)

जो चित्त शक्ति आवृत्त (संकोच) अवस्था में है :- अशुद्ध ।

पंचकृत्य,
विकल्पक्षय

चित्र को चिदरूप में कर लेना — प्रत्यभिज्ञा।

4/3/19

परमशिव

विश्वमय — विश्वोत्तीर्ण

आवृत्त प्रक्रिया
अभिव्यक्ति की प्रत्येक प्रक्रिया आवरण होती है।

वर्ण

सूर्यात्मक (स्वरवर्ण) — सोमात्मक (व्यंजन)